श्री कलराज मिश्र

माननीय राज्यपाल, राजस्थान का उद्‌बोधन

मेवाड़ विश्वविद्यालय का पांचवा दीक्षांत समारोह

दिनांक 29 फरवरी, 2020 **समय प्रातः 11.30 बजे**

स्थान – मेवाड़ विश्वविद्यालय, चितौड़गढ़

मेवाड़ शिक्षा समिति के अध्यक्ष श्री गोविन्द जी, मेवाड़ विश्वविद्यालय के कुलाधिपति डॉ. अशोक कुमार गदिया जी, कुलपति प्रो. वी. के. वैद जी, मानद महानिदेशक श्री आनन्द वर्द्धन जी, कुलसचिव श्री वेन्कट जी, बीएमओ के सदस्य श्री आर.के. गाडिया जी, प्रबन्ध समिति के सदस्यगण, शिक्षकगण, विद्यार्थीगण, अभिभावकगण, भाइयो, बहनो, पत्रकार बन्धुओं और छायाकार मित्रों।

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत,

क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया

दुर्ग पथस्तत्कवयो वदन्ति

अर्थात उठो, जागो और जानकार श्रेष्ठ पुरूषों के सानिध्य में ज्ञान प्राप्त करो। विद्वान मनीषियों का कहना है कि जिस प्रकार छुरे के पैने धार पर चलना दुर्गम कार्य होता है, ज्ञान प्राप्ति का मार्ग भी वैसा ही दुर्गम है। कठोपनिषद्, का यह श्लोक आप सभी को समर्पण भाव से अध्ययन करने हेतु समर्पित है।

शक्ति व भक्ति की नगरी और शौर्य व पराक्रम की भूमि पर यह विश्वविद्यालय स्थापित किया गया है। राणा सांगा, राणा रतनसेन एवं महाराणा प्रताप की स्मृति को नमन करते हुये मैं मेवाड़ विश्वविद्यालय को बधाई देता हूं कि सुदूर स्थल पर शिक्षा का यह संकुल संचालित है।

मुझे बताया गया कि श्री गोविन्द जी दिल्ली में रहते हैं परन्तु आपने अपने पिताश्री के आदेश पर यहां विश्वविद्यालय की स्थापना की। आप साधुवाद के पात्र है क्योंकि अपनी जड़ों से जुड़ाव की भावना को आपने प्रदर्शित किया है।

मुझे प्रसन्नता है कि मेवाड़ विश्वविद्यालय पाँचवा दीक्षान्त समारोह आयोजित कर रहा है। इस पुनीत अवसर पर मुझे स्नातक स्नातकोत्तर एवं पीएचडी की डिग्री प्राप्त कर रहे विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों से सीधे अपनी बात कहने का अवसर प्राप्त हुआ है। आप कहीं भी रहें परन्तु अपना देश अपना राष्ट्र सर्वोपरि रखें।

कवि भूप सिंह जी ने लिखा –

चन्दन भारत की मिट्टी, सदा लगाओ भाल।

मातृभूमि वन्दना का, रखो रोज ख्याल।।

कहा गया है कि,

मित्राणि धन धान्यानि प्रजानां सम्मतानिव।

जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।

मित्र, धन धान्य आदि का संसार में बहुत अधिक सम्मान है, किन्तु माता और मातृभूमि का स्थान स्वर्ग से भी ऊपर होता है।

मुझे बताया गया कि मेवाड़ विश्वविद्यालय में ना केवल भारत के विभिन्न प्रान्तों के अपितु लगभग 10 देशों के विद्यार्थी अध्यननरत है। यह किसी भी शिक्षण संस्थान के लिये गौरव का विषय है। मैं सभी अन्तर्राष्ट्रीय विद्यार्थियों को हार्दिक बधाई देता हूं।

मेरे प्यारे युवा मित्रों, उच्च अध्ययन एक आहुति या हवन के समकक्ष होता है, जिसमें आपको अपना सर्वोत्तम लगाना होता है।

लक्ष्य ऐसे ही प्राप्त नहीं होता, श्रेष्ठता ऐसे ही प्राप्त नहीं होती, इसके लिए लगातार मेहनत करनी पड़ती है।

ध्यान रहे आपकी सफलता का मानक आपको ही निर्धारित करना है, जिसमें आपके गुरूजन, विद्वतजन नियमित आपको निर्देशित करते है। उनके ज्ञान का एवं अनुभव का आपको अधिक से अधिक लाभ उठाने का प्रयत्न करना चाहिये।

यहां यह कहना अनुचित नहीं होगा कि जिस संस्थान में गुरूजनों का सम्मान होता है, उसकी सफलता को कोई रोक नहीं सकता। संदीवनी आश्रम से श्री कृष्ण ने शिक्षा प्राप्त की। गुरू विश्वामित्र से श्रीराम ने शिक्षा प्राप्त की। हमने अपने ग्रन्थों से यही ग्रहण किया है।

सन्त तुलसीदास ने अयोध्याकाण्ड के आरम्भ में ही उल्लेखित किया है –

जे गुरू चरन रेनु सिर धरहीं
ते जनि सकल विभव बस करहीं

जो गुरू चरण रज को मस्तक पर लगा लेता है, वह सकल विश्व को अपने वश में करने की शक्ति रखता है। आशा है यहां भी गुरूजनों का सम्मान उतना ही होता है।

यहां यह कहना भी समीचीन है कि अध्यापकों के स्तर पर भी गुणवत्ता को ध्यान में रखने की आवश्यकता है। आप अपने आप को, अपने विषय को अपडेट (Update) करते है क्या ? आपने जब अध्ययन किया, तब से अब तक आपके विषय में कितने शोध हुए, कितने नये आयाम स्थापित हुए, आपने अध्यापन करते हुए कितने शोध पत्र लिखे, कितने प्रकाशित करवाये, यह सब मायने रखता है।

आप जानते है पहले शब्द कोष, ज्ञान कोष, एनसाईक्लोपीडिया पर निर्भरता होती थी, परन्तु आज गूगल कोष है। प्रति क्षण कुछ नया जुड़ता रहता है। आपके विद्यार्थी आप से अधिक मेहनत करते है, अतः आपकी मेहनत कक्षा में परिलक्षित होनी चाहिये।

किसी भी विश्वविद्यालय की गुणवत्ता दो मानदण्डों से निर्धारित होती है कि आपके विद्यार्थियों का प्लेसमेन्ट और आपकी फैकल्टी की गुणवत्ता। मुझे विश्वास है कि मेवाड़

विश्वविद्यालय इन मानदण्डों पर खरा उतरेगा। आज दीक्षान्त समारोह है, विस्तार से गुणवत्ता पर बातचीत नहीं की जा सकती, परन्तु मैं चाहूंगा कि भविष्य में भी आपकी उपलब्धियों से मुझे आप अवगत कराते रहेंगे।

आपकी प्रतियोगिता आपसे ही है, किसी और से नहीं, कल से बेहतर आज और आज से बेहतर कल करते रहिये, सफलता अवश्य मिलेगी। मुझे यह भी जानकारी मिली है कि ना केवल अभियान्त्रिकी अपितु कृषि के क्षेत्र में भी आपके स्नातक एवं स्नातकोत्तर विद्यार्थी नियमित रूप से शोध कार्य में लगे हुऐ है। यह अत्यन्त प्रसन्नता का विषय है।

आपके शोध कार्य को मान्यता मिले, आप उन्हे पेटेन्ट कराइये, कृषि के क्षेत्र में स्थानीय आवश्यकताओं को दृष्टिगत रखते हुऐ शोध कार्य करने की आवश्यकता है।

जिस प्रकार जोधपुर एवं जैसलमेर में काजरी CAZRI (Centrral Arid Zone Research Institute) कार्यरत है और मरूस्थल को उपजाऊ बना रहा है, आप अपने क्षेत्र की जलवायु, भूमि और स्थानीय आवश्यकता को ध्यान में

रखकर शोध कार्य करें। काजरी CAZRI व ICAR (Indian Council of Agriculture Research) के साथ MoU करिये। राष्ट्रीय एवं विदेशी विश्वविद्यालयों के साथ एक्सचेन्ज कार्यक्रम करिये।

नेल्सन मंडेला ने कहा था –

शिक्षा एक ऐसा हथियार है जो दुनिया बदलने की शक्ति रखता है।

विश्वविद्यालय की शिक्षा केवल उपाधि प्राप्ति का केन्द्र ना होकर उद्यमिता विकसित करने का केन्द्र भी होता है। अब तो केन्द्र सरकार ने भी स्किल डवलपमेन्ट पर पूरा फोकस किया हुआ है। आप को इस दिशा में ना केवल कार्य करना है अपितु पॉलिटेक्निक के साथ स्किल डवलपमेन्ट का सेन्टर भी विकसित करना है।

शिक्षा रोजगारोन्मुखी होनी चाहिये। ऐकेडमिक्स 'एन्टरप्रेनरशिप,' 'स्किल डवलपमेन्ट और इन्डस्ट्री जब आप इसका सन्तुलन बना लेंगे तो आपकी शिक्षा स्वतः ही रोजगोरान्मुखी हो जायेगी। हमारा हर युवा रोजगार हेतु,

वैतनिक कर्मचारी होने के लिये शहरों की तरफ भागता है। इस व्यवस्था को रोकने की जरूरत है। हां, ऐसा कुछ करिये कि आपका इंजीनियर बच्चा आपके गाँव में ही कुछ खोले, कुछ आरम्भ करें, और दूसरों के बच्चों को भी नौकरी दे सके।

ऐसा ग्रेजुएट तैयार करिये जो नौकरी के पीछे ना भागे। उद्यमी बने, उद्यमिता की तरफ जाये, गांव देहात कस्बों में रहकर कार्य करे। आपका युवा दूसरों को भी कार्य देने की स्थिति में आ जाये, यही आपकी आधारभूत सफलता का मानक होगा, मानदण्ड होगा।

मुझे अतीव हर्ष का अनुभव हो रहा है कि आज इस पाँचवे दीक्षान्त समारोह में कुल 860 विद्यार्थी एवं शोधार्थी अपनी परीक्षा उत्तीर्ण कर उपाधि प्राप्त कर रहे है। मैं यह भी कहना चाहता हूं कि यह विश्वविद्यालय की परीक्षा थी, अब आपकी वास्तविक परीक्षा आरम्भ होने जा रही है। आप

समाज को क्या देंगे, राष्ट्र को क्या देंगे, इस विश्वविद्यालय का नाम कितना रोशन करेंगे, यह महत्वपूर्ण है।

आपको एक बार पुनः शुभकामनाएं। आपने इस समारोह में मुझे बुलाया इसके लिए मैं आप सभी का आभार व्यक्त करता हूँ।

धन्यवाद। जयहिन्द।